Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

तत्कालीन भारतीय शैक्षिक परिवेश में मालवीय जी का प्रयास एक अध्ययन

सुषमारानी

एसोसिएटप्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, एन.एम.एस.एन.दास (पी.जी.)कॉलेज, बदायूं, भारत।

Article Info
Volume 6, Issue 2
Page Number : 104-111

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

शोधसारांश– शिक्षा किसी भी समाज के विकास और प्रगति की आधारशिला होती है। भारत में भी शिक्षा को सामाजिक जागरूकता और सशक्तिकरण का प्रमुख माध्यम माना गया है। किंतु ब्रिटिश शासनकाल के दौरान भारतीय समाज में शैक्षिक संसाधनों की कमी, जागरूकता का अभाव और वर्गीय असमानताएं व्यापक रूप से व्याप्त थीं। ऐसे चुनौतीपूर्ण परिवेश में पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रयास किए। मालवीय जी ने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता की कुंजी के रूप में देखा। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) की स्थापना कर भारतीयों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया। उन्होंने शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के लिए न केवल संस्थान स्थापित किए, बल्कि अपनी विचारधारा से लोगों को शिक्षित होने हेतु प्रेरित भी किया। उनके प्रयासों से तत्कालीन भारतीय शैक्षिक परिवेश में नवचेतना, नवसृजन और नवविकास की लहर उठी। यह अध्ययन मालवीय जी के शैक्षिक दृष्टिकोण, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित संस्थानों के माध्यम से भारतीय समाज में आए शैक्षिक परिवर्तन का विश्लेषण करता है। मालवीय जी के योगदान ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान की और स्वतंत्रता पूर्व भारत में शिक्षा के जनसामान्यीकरण की नींव रखी।

मुख्य शब्द: शिक्षा, भारतीय समाज, नैतिक मूल्य, स्त्री शिक्षा, शैक्षिक परिवेश, काशी विश्वविद्यालय।

परिचय- शिक्षा के अभाव में किसी भी देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी भी राष्ट्र के व्यक्ति को अपना, समाज तथा देश का समुचित विकास करने की प्रेरणा प्रदान होती है। किसी भी क्षेत्र में जब तक व्यक्ति को प्रोत्साहित नहीं किया जाता, तब तक उस क्षेत्र में वह अच्छा विकास नहीं कर पाता

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

है। मालवीय जी का मानना था कि शिक्षकों को अपने छात्रों के चरित्र और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है, और शिक्षक शिक्षा सिद्धांत और व्यवहार के संयोजन पर आधारित होनी चाहिए, (अहमद मीर राहुल एट अल., 2023)। शिक्षा का क्षेत्र ऐसा वृहद एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसके अन्तर को छूना मानव मात्र के लिये बहुत सरल कार्य नहीं है लेकिन जिस व्यक्ति में यह क्षमता उत्पन्न हो जाती है वह कठिन परिश्रम करके शिक्षा के अन्तस को छू कर इस भारत माँ की पवित्र भूमि का एक कुशल प्राणी बन जाता है। विद्वानों का मानना है कि स्वस्थ व्यक्ति का स्वस्थ विकास स्वस्थ परिवेश में सम्भव है जब तक व्यक्ति स्वस्थ नहीं होगा तब तक उसका स्वस्थ विकास नहीं हो सकता और विकास व्यक्ति का तभी होगा जब उसे विकास करने के लिये अच्छा वातारण प्रदान हो सकेगा। प्राय: कहा जाता है कि जिस देश का जैसा शैक्षिक परिवेश होगा, उस देश के लोगों का वैसा ही शैक्षिक विकास सम्भव हो सकेगा। तत्कालीन भारतीय शैक्षिक परिवेश को शैक्षिक दृष्टिकोण से पूर्णतया स्वस्थ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस समय शैक्षिक समाज की दशा ठीक नहीं है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को जहाँ से उद्भव माना जाता है उसी की स्थिति आज काफी दयनीय हो गयी है। इस दयनीय दशा से शिक्षा प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती क्योंकि जिस प्रकार किसी मकान का निर्माण करते समय उसकी बुनियाद पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक होता है उसी प्रकार वर्तमान भारत में शिक्षा और समाज का समन्वित विकास करने के लिये प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करने की परम आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा की वह धुरी है, जिसे सही दिशा में गति देने की आवश्यकता है और इसके लिये समाज व शैक्षिक जगत के विचारक एवं सरकार को अपने कार्य के प्रति सचेत होना पड़ेगा। जब तक उपर्युक्त सभी लोग जागरूक होकर शैक्षिक पथ को प्रकाशित नहीं करगें तब तक शैक्षिक परिवेश स्वस्थ नहीं हो सकेगा। इसलिए वर्तमान समय में शैक्षिक समाज के लोगों को इस तरह कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे शैक्षिक वातावरण स्वस्थ हो और समाज के लोग शिक्षा से प्रभावित हो सकें। शिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की जो वकालत मालवीय जी ने की थी, वही बात एनईपी 2020 में मातृभाषा में आरंभिक शिक्षा की अनुशंसा के रूप में देखने को मिलती है, (शर्मा, et.al. 2021)। जब तक शिक्षा में सुधार नहीं होगा तब तक समाज की दशा नहीं बदलेगी। अत: सामाजिक सुधार के बारे में विचार करने से पहले शिक्षा के प्रत्येक स्तर को देखने की आवश्यकता है और यह कार्य किसी सामान्य व्यक्ति के द्वारा सम्भव नहीं है। इसके लिये ऐसे महान व्यक्तित्व की जरुरत है जो शिक्षा के मर्म को जानने की क्षमता रखता है और ऐसा क्षमतावान जो पुरूष होगा उसे महापुरूष कहा जा सकता है। इस क्षेत्र में पं0 मदन मोहन मालवीय जी बहुत ही अग्रणी कुशल एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा के लिये समर्पित कर दिया आज उनके आदर्श व्यक्तित्व का गुणगान देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी किया जा रहा है। मूल्य–आधारित शिक्षा और नैतिक अधिगम पर आज जो जोर दिया जा रहा है, उसकी जड़ें मालवीय जी द्वारा स्थापित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं में निहित हैं, (कुमार, एस. 2023)।

वर्तमान भारत के शैक्षिक परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस समय जो शैक्षिक परिवेश भारत में है, वह शैक्षिक विकास के लिये काफी हद तक लाभप्रद नहीं हो सकता क्योंकि उसमें काफी दोष है। आजकल शिक्षा से लगाव रखने वाले व्यक्ति शिक्षा का व्यवसायीकरण करने पर तुले हुए हैं जिससे शिक्षा का विकास सही ढंग से नहीं हो पा रहा है और न ही शैक्षिक परिवेश शुद्ध हो रहा है। आज का शैक्षिक परिवेश बदलाव चाहता है। बिना बदलाव के शिक्षा

प्रक्रिया में सुदृढीकरण नहीं हो सकता है। वर्तमान भारतीय जनता को शिक्षा के तरफ आकर्षित करने के लिये ऐसा वातावरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है जो व्यक्ति पर धनात्मक प्रभाव डालने में सफल हो सके। मालवीय जी ने कहा था, 'कोई राष्ट्र उतना ही उन्नत होता है जितना कि वहां शिक्षा और बुद्धि जनसामान्य में फैली होती है', यही भावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है, (प्रो. अरोड़ा नीना, 2023)।

वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा का प्रत्येक स्तर रोगग्रस्त दिखाई दे रहा है। इस स्थिति को देखते हुए भी लोग इस पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं, जबकि इस बिन्दु पर गहन विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है जिससे शिक्षा के प्रत्येक स्तर को स्वस्थ किया जा सके। प्राथमिक शिक्षा जो शिक्षा की जड़ के रूप में है वह भी कमजोर हो रही है। छात्रों की बढ़ती हुई संख्या के अनुरूप शिक्षकों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है जिससे अधिकांश विद्यालय बन्द रहते हैं। अधिकतर प्राथमिक विद्यालय एक-दो शिक्षक के सहारे चल रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत सही शिक्षा शिक्षार्थी नहीं ग्रहण कर पा रहा है। यही स्थिति माध्यमिक विद्यालयों में भी है। वहां भी शिक्षक की अत्यधिक कमी दिखाई दे रही है जिससे विद्यालय का शैक्षिक परिवेश दूषित हो रहा है और शिक्षार्थियों को अपना भविष्य अन्धकारमय दिखाई दे रहा है। उक्त बिन्दु पर भी शैक्षिक जगत के लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता हैं तभी शिक्षा में सुधार सम्भव हो सकेगा।

उच्च शिक्षा आज व्यावसायिक पथ पर अग्रसर है अर्थात उच्च शिक्षा को लोग एक व्यवसाय के रूप में प्रयोग करने लगे हैं जिससे इसमें काफी दोष आ गया है और उच्च शिक्षा के क्षेत्र का जो वातावरण अथवा परिवेश हैं वह अत्यधिक दूषित दिखाई दे रहा है। जिससे शिक्षार्थी को सही ज्ञान अर्जित करने में परेशानी हो रही है और शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिये समाज को सचेत होना होगा और जो शैक्षिक वातावरण को दूषित करने वाले शिक्षा माफिया हैं, समाज को उनके विरोध में आवाज उठानी होगी तथा सरकार तक अपनी आवाज पहुँचाना होगा जिससे उक्त समस्या का समाधान सुचारू रूप से सम्भव हो सके और समाज को सही दिशा मिल सके। कहा गया है कि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त होती है अर्थात शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का जीवन, जीवन के उद्देश्य तक पहुँच सकता है। पं0 मदन मोहन मालवीय जी का मानना था कि विद्यार्थियों के लिये शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि वे अपनी शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक शक्तियों को परिपुष्ट और विकसित कर सकें और आगे चल कर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सकें, कलापूर्ण और सौन्दर्यमय जीवन व्यतीत कर सकें, समाज में आदरणीय और विश्वासपात्र बन सके तथा देश भक्ति, जो मनुष्य को उच्चकोटि की सेवा करने की ओर प्रवृत्त करती है उससे प्रभावित होकर अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की समुचित सेवा कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पंडित मदन मोहन मालवीय के उस स्वप्न को साकार करती दिखती है जिसमें भारतीय मूल्य-आधारित, परंतु वैश्विक स्तर की शिक्षा व्यवस्था का सपना देखा गया था, (दुबे, आर. एस., 2020)।

मालवीय जी ने शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित करने के लिये राष्ट्रीय प्रणाली के आधार पर प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों में सर्वसाधारण के लिये कहा कि शिक्षा नि:शुल्क दी जाय जो अनिवार्य भी हो। उनका कहना था कि सभी स्तर पर शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई बच्चा निर्धन होने के कारण उससे वंचित न रहे। वे बम्बई के भूतपूर्व गर्वनर एलफिन्स्टन की इस बात से सहमत थे कि "गरीबों की सुख शान्ति बहुत हद तक शिक्षा पर निर्भर है।" इसके जरिये ही वे विवेक और आत्म

सम्मान का स्वभाव प्राप्त कर सकते हैं। जिससे सब गुण विकसित होते है। उनकी धारणा थी कि शिक्षा का व्यापक विस्तार समाज में फैली बहुत सी विषमताओं और कुरीतियों को दूर करके छोटी जातियों का जीवन स्तर ऊँचा उठा देगा और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करना उनके लिये सुलभ हो जायेगा। उन्होंने सन् 1927 में असेम्बली में लाजपत राय के इस सुझाव का समर्थन किया था कि राजकोष से प्रति वर्ष एक करोड़ रूपया हरिजन विद्यार्थियों की शिक्षा पर खर्च किया जाय और अपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने प्रारम्भ से ही हरिजन विद्यार्थियों के लिये शिक्षा नि:शुल्क कर दी थी। मालवीय जी स्त्री शिक्षा का समुचित प्रबन्ध भी समाज का पुनीत कर्तव्य समझते थे। उनका कहना था कि पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ही भारत की भावी सन्तानों की माताएं हैं। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वज्ञानियों, व्यापार तथा कला कौशल के नेताओं आदि की प्रथम शिक्षिकाऐं हैं। वे चाहते थे कि एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधार पर स्त्रियों को इस तरह शिक्षित किया जाय कि उनमें प्राचीन तथा नवीन सभ्यताओं के सभी सद्गुणों का समन्वय हो जो अपनी शिक्षा द्वारा भावी भारत के पुनर्निमाण में पुरुषों का पूर्ण रूप से सहयोग कर सकें। सन् 1911 में गोखले के विधेयक पर बोलते हुए मालवीय जी ने कहा था कि "समाज में आधे भाग को ज्ञान की ज्योति से तथा उस उत्कृष्ट जीवन से जो ज्ञान द्वारा सम्भव है, वंचित रखना बहुत दु:खकारी बात होगी।" मालवीय जी ने समावेशी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का सपना देखा था, एनईपी 2020 इस सपने को साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम है, (मसीह, एम., 2022)।

मालवीय जी का कहना था कि पारस्परिक सद्भाव तथा सहयोग के बिना व्यावसायिक उन्नति हो ही नहीं सकती और जीवन में सद्भाव तथा सहयोग को विकसित करने के लिये चरित्र गठन आवश्यक है। मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा सबसे पहले चरित्र निर्माण करे, जिससे करियर निर्माण होता है। यह सोच आज एनईपी 2020 में समग्र विकास पर जोर के रूप में पुनर्जीवित हो रही है, (विश्व संवाद केंद्र, आंध्र प्रदेश, 2020)। उनके विचार में चरित्र ही मनुष्य को बनाता है। सदाचार मनुष्य का परमधर्म है। उसकी रक्षा मनुष्य का पुनीत कर्तव्य तथा उसकी वृद्धि उसका परम पुरुषार्थ है मालवीय जी का कहना था कि "राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति को आचार के ही शासन से सदा शासित तथा प्रभावित रहना चाहिए तथा उनमें विश्वास, मृदुभाषण एवं व्यवहार की सच्चाई और सद्गुणों का विकास हो सकता है।

आचरण की शुद्धि, पुष्टि और परिपक्वता के लिये मालवीय जी धर्म, नागरिकता और नैतिकता की शिक्षा आवश्यक समझते थे। चरित्र, संस्कृति और कौशल, ये तीन सिद्धांत जिन पर मालवीय जी ने बल दिया था, अब 21वीं सदी की भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख आधार बन गए हैं, (कुमार, एस, 2023)। उनके धर्म की व्याख्या नैतिकता से ओत-प्रोत और नागरिकता से समन्वित थी। वे देश भक्ति को धर्म का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार करते थे। उनकी नैतिकता बहुत अंशों में धर्म ग्रन्थों में प्रतिपादित नैतिक आदर्शो पर आश्रित थी । आत्मोत्पन्य व्यवहार, नि:स्पृही लोक सेवा उनके सर्वोत्तम सद्गुण थे। ये दोनों श्रीमद्भागवतगीता द्वारा प्रतिपादित समत्व, निष्काम सेवा तथा ईश्वरार्पण सत्कर्म के सिद्धान्तों पर आधारित है उनकी नागरिकता की व्याख्या लोकतान्त्रिक थी उनके विचार जड़ता से रहित और आधुनिकता से प्रभावित और समन्वित थे। उनकी मूलधाराएँ निर्विवाद थी। सद्भावनाओं से अनुप्राणित, सदाचार से विभूषित जीवन ही आत्मोत्कर्ष और जनकल्याण का उत्तम साधन हो सकता है। देश प्रेम की शिक्षा ही राष्ट्र का उद्धार कर सकती है। नि:स्पृह देश भक्त ही राष्ट्र की सच्ची ठोस सेवा

कर सकता है। लोकतान्त्रिक नागरिकता के मूल सिद्धान्तों पर आधारित लोकतान्त्रिक चरित्र और व्यवहार ही लोकतन्त्र को स्थायी, सुदृढ़ और जनोपयोगी बना सकता है।

मालवीय जी के विचार में मानव के सर्वांगीण विकास तथा उत्कृष्ट आनन्दमय जीवन के लिये विकासोन्मुखी व्यापक शिक्षा तथा चरित्र गठन के साथ-साथ स्वस्थ निर्मल जीवन, ज्ञान-विज्ञान का विस्तार, ललित कलाओं के प्रति अभिरूचि तथा सुख-साधन की भौतिक सुविधायें भी आवश्यक हैं। मालवीय जी की परंपरागत ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय की दूरदर्शिता, आज की नई शिक्षा नीति की नींव बन गई है, (मुरलीधरन और अन्य, 2022। स्वास्थ्य की रक्षा, शारीरिक शक्ति की पुष्टि वे मानव का पुनीत कर्तव्य मानते थे वे शरीर की रक्षा और पुष्टि के लिये उपयुक्त आहार-विहार तथा ब्रह्मचर्य और व्यायाम आवश्यक समझते थे। उनका प्रयास था कि प्रत्येक विद्यार्थी पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा नित्य नियमित रूप से व्यायाम करे। उनका कहना था कि ब्रह्मचर्य ही हमें वह आत्मबल देता है जिसके द्वारा हम संसार के सब कष्टों और बाधाओं का साहस के साथ सामना कर सकते हैं। आज की डिजिटल शिक्षा क्रांति, परंपरा में आधुनिकता लाने की मालवीय जी की सोच की आधुनिक अभिव्यक्ति है, (हिंदू ब्यूरो, 2024)।

मालवीय जी ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो कई कलाओं से युक्त हो क्योंकि उनका मानना था कि व्यक्ति या मनुष्य का कला विहीन जीवन शुष्क और नीरस होता है जबकि ललित कलाओं का ज्ञान उनकों परखने की क्षमता तथा शुद्ध भावनाओं के साथ उनके प्रति अभिरूचि और समयानुकूल उनका अभ्यास जीवन को सरस और आनन्दमय बना देता है। उनकी धारणा थी कि वह शिक्षा पद्धति अपूर्ण ही नहीं निरर्थक और हानिकारक है। जिसके द्वारा नवयुवक को अपने देश और समाज की बौद्धिक समृद्धि की ठीक-ठीक जानकारी न हो सके। उनके विचार में वह व्यक्ति शिक्षित नहीं है जिसका जीवन अपने पूर्वजों के सद्गुणों से अनुप्रमाणित न हो, जिसे अपने पूर्वजों के महत्वपूर्ण देन का कोई ज्ञान न हो, जिसे अपने देश के इतिहास की सही-सही जानकारी न हो, जिसमें अपने जीवन को जनता से आत्मसात् करने की क्षमता न हो वे ज्ञान को किसी विशिष्ट जाति या देश की बपौती नहीं समझते थे। वे यह कभी नहीं मानते थे कि हमारे पास सब कुछ है। हमें दूसरों से कुछ लेना नहीं है। वे स्वीकार करते थे कि हमारे पूर्वजों की तरह दूसरे देश के विद्वानों ने भी अपनी प्रतिभा और योग्यता से संसार को अलंकृत किया है। सभी विद्वानों का आदर और ज्ञान का आदान-प्रदान वे मानव प्रगति और राष्ट्र की उन्नति के लिये आवश्यक समझते थे। वे दूसरे देशों के विद्वानों के युक्तियुक्त समाजोपयोगी विचारों को ग्रहण करने के लिये हमेशा तैयार रहते थे। वे मनु, भीष्म, वशिष्ठ, शुक्र आदि विद्वानों के इस विचार से सहमत थे कि हमें अपने गुरूओं और पूर्वजों के सद्गुणों को ग्रहण करते हुए सभी विद्वानों के युक्तियुक्त विचारों के शुभ ज्ञान को विनय पूर्वक स्वीकार करना चाहिए। शैक्षणिक स्वायत्तता और नवाचार का जो स्वरूप आज अपनाया जा रहा है, वह मालवीय जी के विचारों का ही विस्तार है, (विकिपीडिया, 2025)।

इस तरह पं0 मदन मोहन मालवीय जी ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अग्रसर करने का प्रयास किया और कहा कि किसी भी देश का समाज और साहित्य तभी उच्चता पा सकता है जब उस देश की शिक्षा उन्नत होगी। इसलिए शिक्षा जगत से जुड़े हुए लोगों को अपने मन को पवित्र भाव से सही दिशा में गति करने के लिये अग्रसर करना चाहिए तभी हमारा देश विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है और देश के लोगों में सुख-समृद्धि आ सकती है।

नई शिक्षा नीति एवं मालवीय जी के शैक्षिक विचार

भारत की नई शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) एक समग्र, लचीली, समावेशी और बहुआयामी शिक्षा प्रणाली की स्थापना की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जिसका मूल उद्देश्य शिक्षा को समाज के हर वर्ग के लिए सुलभ और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। इस नीति में बाल्यावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक परिवर्तनकारी सुधार प्रस्तावित किए गए हैं, जिनका केंद्र बिंदु ज्ञान, कौशल, मूल्यों और नैतिकताओं का समन्वित विकास है। जब हम पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की ओर दृष्टि डालते हैं, तो पाते हैं कि नई शिक्षा नीति की कई विशेषताएं उनके शैक्षिक दृष्टिकोण के साथ गहराई से मेल खाती हैं।

मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक जागरूकता और नैतिक विकास का साधन भी होनी चाहिए। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना इसी उद्देश्य से की थी कि भारतीय विद्यार्थियों को भारतीय परंपरा और आधुनिक विज्ञान के समन्वय वाली शिक्षा प्राप्त हो। आज नई शिक्षा नीति भी इसी प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देती है, जहाँ छात्र अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकें, भारतीय संस्कृति से जुड़े रहें और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हो सकें।

मालवीय जी की शिक्षा नीति में धार्मिक सहिष्णुता, नैतिकता, देशभक्ति और सामाजिक समरसता को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे शिक्षा को सेवा और आत्मानुशासन का माध्यम मानते थे। एनईपी 2020 भी छात्रों में नैतिक मूल्यों, संवेदनशीलता और रचनात्मकता के विकास पर बल देती है। इसके साथ ही, यह नीति शिक्षक प्रशिक्षणए डिजिटल शिक्षा, लचीले पाठ्यक्रम, कौशल विकास, और बहुभाषी शिक्षा की वकालत करती है, जो मालवीय जी की दूरदर्शी सोच की पुष्टि करती है।

मालवीय जी ने विशेष रूप से स्त्री शिक्षा, दलित वर्ग की शिक्षा, और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक समानता और आत्मनिर्भरता का साधन माना। नई शिक्षा नीति भी इन लक्ष्यों को समाहित करती है, जैसे लैंगिक समानताए समावेशी शिक्षा, और शिक्षा में अवसरों की समानता। अत: यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति पंडित मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन को आधुनिक संदर्भ में मूर्त रूप देने का प्रयास है।

इस प्रकार मालवीय जी की शैक्षिक सोच और नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों में गहरा साम्य दिखाई देता है। दोनों ही शिक्षा को समाज सुधार, राष्ट्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास का माध्यम मानते हैं। नई शिक्षा नीति वास्तव में मालवीय जी के सपनों के भारत की ओर एक सशक्त कदम प्रतीत होती है।

निष्कर्ष- निष्कर्षत:, पं0 मदनमोहन मालवीय भारत भूमि में राष्ट्र की स्वाधीनता के संवाहक योद्धा के रूप में आये। महामना मालवीय ने जीवन में राष्ट्रवाद को सर्वोच्च महत्ता दी। उन्होंने हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय कार्य किया। शिक्षा की जैसी प्रखर ज्योति उन्होंने जलायी, वह विश्व इतिहास में अतुल हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उनकी स्मृति का जीवन्त स्मारक है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए वे भारत के गांव-गांव घूमे निश्चय ही उनका व्यक्तित्व एक सच्चे राष्ट्र भक्त और हिन्दू समाज के अनन्य सेवक का रहा। हिन्दू राष्ट्रवाद की जैसी वाणी, स्वदेशीयत की जैसी बीन उन्होंने बजायी तथा हिन्दी भाषा की जैसी पताका उन्होंने लहरायी वह भारत में सदा स्मरणीय रहेगी और उनके शैक्षिक विचार नई शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से जनमानस त क पहुँचतक रहेंगे।

संदर्भ

1. Ahmad Mir Rahul, Rather Shabnum Showkat, (2023), Educational Philosophy of Pandith Madan Mohan Malaviya and Its Relevance on Contemporary System of Education, March 2023International Journal For Multidisciplinary Research 5(2):1-7; DOI:10.36948/ijfmr.2023.v05i02.2080
2. प्रो. अरोड़ा, नीना (2023), "भारतीय उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता: बी.एच.यू. और मालवीय जी के योगदान पर विचार"। 'भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन जर्नल', खंड 9, अंक 1।
3. बाला, बाजपेयी शुक्ल, "शिक्षा के आधार भूत तत्व " पृष्ठ-158
4. कुमार, संजय (2023), "मूल्य-आधारित शिक्षा और भारतीय दर्शन: मालवीय जी की शैक्षिक विरासत"। 'इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च', खंड 15, अंक 3, पृष्ठ 101-108।
5. मालवीय, पद्मकान्त, "मालवीय जी जीवन झलकियाँ, पृष्ठ-154
6. मसीह, मनीषा (2022), "एनईपी 2020 और समावेशी शिक्षा: पं. मदन मोहन मालवीय की दृष्टि का प्रभाव"। 'विद्या जर्नल ऑफ सोशल एंड एजुकेशनल स्टडीज', खंड 7, अंक 2।
7. मुरलीधरन, के., और शर्मा, पी. (2022), "प्राचीन और आधुनिक शिक्षा के संगम में मालवीय जी की भूमिका"। 'एजुकेशन साइंसेज दृ एक भारतीय परिप्रेक्ष्य', खंड 10, अंक 4, पृष्ठ 23-30।
8. हिंदू ब्यूरो (2024),"डिजिटल इंडिया और शिक्षा में परिवर्तन: मालवीय जी की शिक्षा-सोच की आधुनिक अभिव्यक्ति"। 'द हिंदू (हिंदी संस्करण)', 10 जनवरी 2024।
9. सिंह, एसपी "एजूकेशनलडाक्ट्रीज आफ प्लेटो एण्ड श्री अरविन्दो कम्प्रेटिव स्टडी" पृष्ठ-72
10. सिंह, एसपी "शिक्षा के आधार" पृष्ठ-136
11. विकिपीडिया योगदानकर्ता (2025), "पंडित मदन मोहन मालवीय"। 'हिंदी विकिपीडिया', अंतिम संशोधन: 20 मार्च 2025।
12. विश्व संवाद केंद्र, आंध्र प्रदेश (2020), "पंडित मदन मोहन मालवीय: शिक्षा में भारतीयता का आधार"। 'विश्व संवाद केंद्र द्वारा प्रकाशित विशेषांक', अगस्त 2020।
13. श्रीवास्तव, यमुना प्रसाद, "महामना मालवीय" पृष्ठ-198
14. शर्मा, अंजली (2021), "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और मातृभाषा में शिक्षा: मालवीय जी के विचारों का पुनर्पाठ"। 'भारतीय शिक्षा पत्रिका', खंड 12, अंक 1, पृष्ठ 45-50।
15. सीताराम चतुर्वेदी आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ-18
16. डॉ श्रीधर पाण्डेय एवं डॉ लालजी पाण्डेय विश्व के कुछ प्रमुख शिक्षा मनीषी एवं शिक्षा दर्शन, पृष्ठ-259-260

17. दुबे, आर. एस. (2020), "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पंडित मदन मोहन मालवीय जी की शिक्षा-दृष्टि की पुनर्प्रासंगिकता"। 'ऑर्गनाइजर पत्रिका', 24 जुलाई 2020।
18. चतुर्वेदी, सीताराम, "महामना मालवीय जी", पृष्ठ-154
19. नैशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (NCTE) (2021), "शिक्षक शिक्षा और मालवीय जी की विचारधारा"। 'शिक्षक संवाद पत्रिका', अंक 5, जून 2021।